3.3.2 (Supporting Documents)

© लेखक

ISBN : 978-93-82597-50-6

प्रकाशक
साहित्य संचय
बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस
ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस
राम निकुन्ज, पुतलीसडक
काठमांडौ, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2017
कवर डिजाइन : प्रदीप कुमार

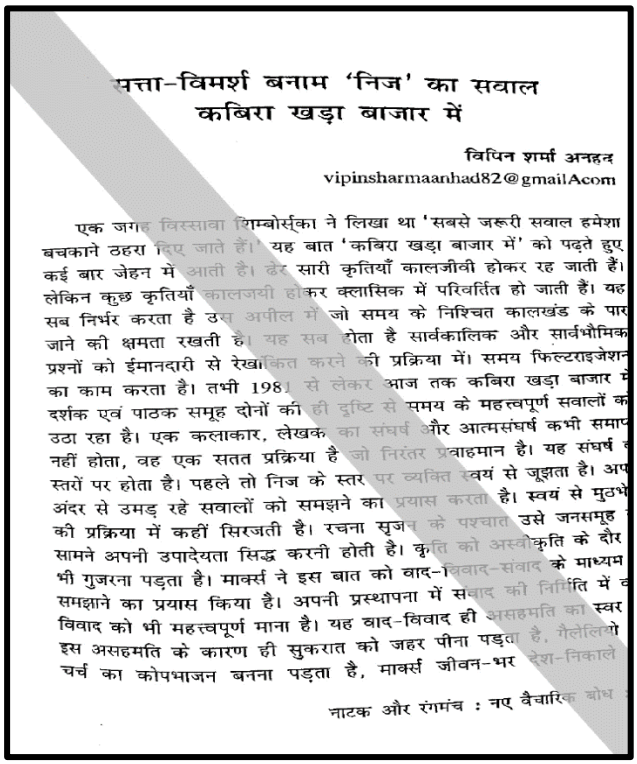

सत्ता-विमर्श बनाम 'निज' का सवाल
कबिरा खड़ा बाजार में

विपिन शर्मा अनहद
vipinsharmaanhad82@gmailAcom

एक जगह विस्सावा शिम्बोर्स्का ने लिखा था 'सबसे जरूरी सवाल हमेशा बचकाने ठहरा दिए जाते हैं।' यह बात 'कबिरा खड़ा बाजार में' को पढ़ते हुए कई बार जेहन में आती है। ढेर सारी कृतियाँ कालजीवी होकर रह जाती हैं। लेकिन कुछ कृतियाँ कालजयी होकर क्लासिक में परिवर्तित हो जाती हैं। यह सब निर्भर करता है उस अपील में जो समय के निश्चित कालखंड के पार जाने की क्षमता रखती है। यह सब होता है सार्वकालिक और सार्वभौमिक प्रश्नों को ईमानदारी से रेखांकित करने की प्रक्रिया में। समय फिल्टराइजेशन का काम करता है। तभी 1981 से लेकर आज तक कबिरा खड़ा बाजार में दर्शक एवं पाठक समूह दोनों की ही दृष्टि से समय के महत्त्वपूर्ण सवालों को उठा रहा है। एक कलाकार, लेखक का संघर्ष और आत्मसंघर्ष कभी समाप्त नहीं होता, वह एक सतत प्रक्रिया है जो निरंतर प्रवाहमान है। यह संघर्ष कई स्तरों पर होता है। पहले तो निज के स्तर पर व्यक्ति स्वयं से जूझता है। अपने अंदर से उमड़ रहे सवालों को समझने का प्रयास करता है। स्वयं से मुठभेड़ की प्रक्रिया में कहीं सिरजती है। रचना सृजन के पश्चात उसे जनसमूह के सामने अपनी उपादेयता सिद्ध करनी होती है। कृति को अस्वीकृति के दौर से भी गुजरना पड़ता है। मार्क्स ने इस बात को वाद-विवाद-संवाद के माध्यम से समझाने का प्रयास किया है। अपनी प्रस्थापना में संवाद की निर्मिति में वे विवाद को भी महत्त्वपूर्ण माना है। यह वाद-विवाद ही असहमति का स्वर है। इस असहमति के कारण ही सुकरात को जहर पीना पड़ता है, गैलेलियो को चर्च का कोपभाजन बनना पड़ता है, मार्क्स जीवन-भर देश-निकाले

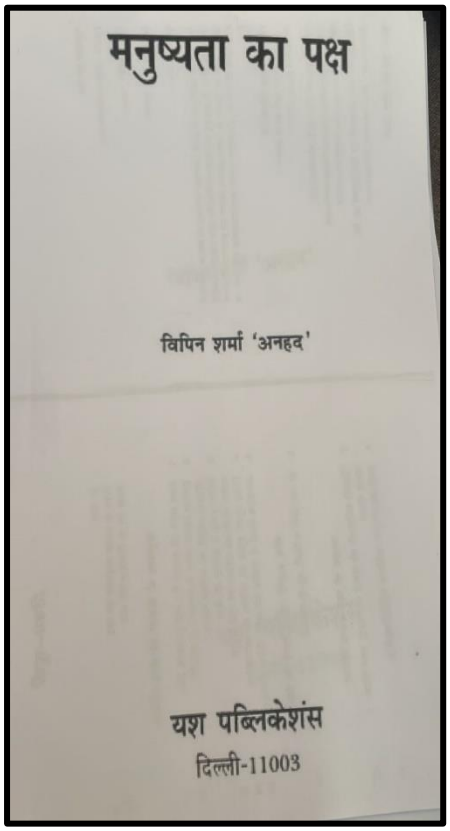

मनुष्यता का पक्ष

विपिन शर्मा 'अनहद'

यश पब्लिकेशंस
दिल्ली-11003

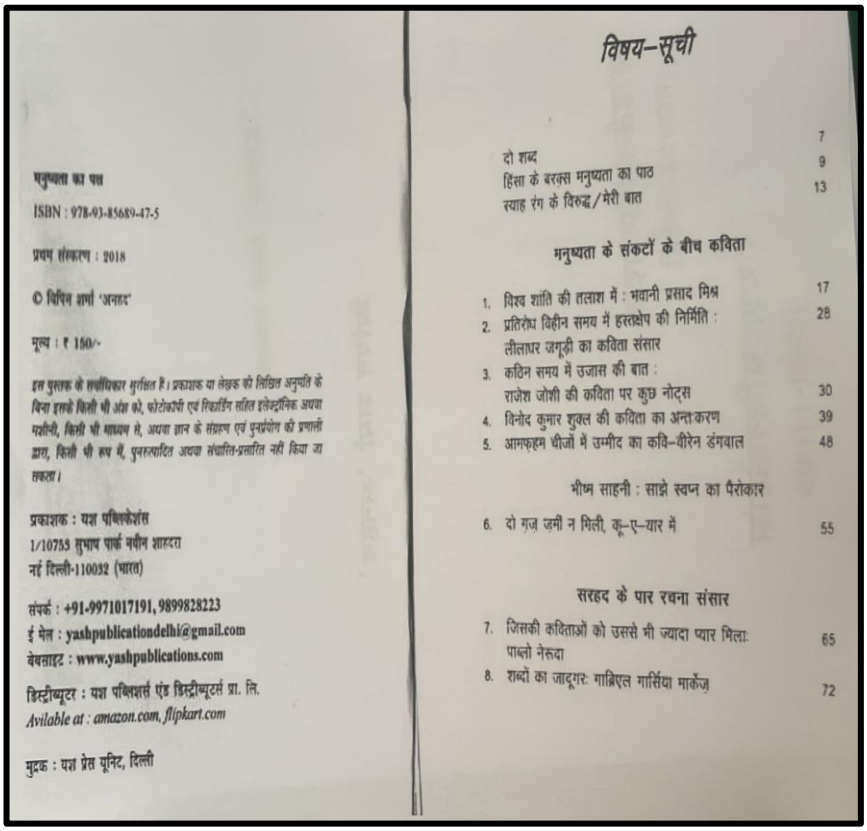

मनुष्यता का पक्ष
ISBN : 978-93-85689-47-5
प्रथम संस्करण : 2018

© विपिन शर्मा 'अनहद'

मूल्य : ₹ 150/-

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक या लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक : यश पब्लिकेशंस
1/10753 सुभाष पार्क नवीन शाहदरा
नई दिल्ली-110032 (भारत)

संपर्क : +91-9971017191, 9899828223
ई मेल : yashpublicationdelhi@gmail.com
वेबसाइट : www.yashpublications.com

डिस्ट्रीब्यूटर : यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि.
Avilable at : amazon.com, flipkart.com

मुद्रक : यश प्रेस यूनिट, दिल्ली

विषय-सूची

दो शब्द 7
हिंसा के बरक्स मनुष्यता का पाठ 9
स्याह रंग के विरुद्ध/मेरी बात 13

मनुष्यता के संकटों के बीच कविता

1. विश्व शांति की तलाश में : भवानी प्रसाद मिश्र 17
2. प्रतिरोध विहीन समय में हस्तक्षेप की निर्मिति : लीलाधर जगूड़ी का कविता संसार 28
3. कठिन समय में उजास की बात : राजेश जोशी की कविता पर कुछ नोट्स 30
4. विनोद कुमार शुक्ल की कविता का अन्तःकरण 39
5. आमफ़हम थीजों में उम्मीद का कवि-वीरेन डंगवाल 48

भीष्म साहनी : साझे स्वप्न का पैरोकार

6. दो गज़ ज़मीं न मिली, कू-ए-यार में 55

सरहद के पार रचना संसार

7. जिसकी कविताओं को उससे भी ज्यादा प्यार मिला: पाब्लो नेरूदा 65
8. शब्दों का जादूगर: गाब्रिएल गार्सिया मार्केज़ 72

नयी सदी का सिनेमा

विपिन शर्मा 'अनहद'

अनुज्ञा

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटो कापी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक / प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है।
किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक
प्रथम संस्करण : 2018

ISBN 978-93-86810-13-7

प्रकाशक
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032
email: anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com
फोन : 011-22825424, 09350809192
www.anuugyabooks.com

मूल्य : 250.00 रुपये

मुद्रक
अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

NAI SADI KA CINEMA *by* Vipin Sharma 'Anhad'

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटो कापी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक / प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है।
किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© संपादक
प्रथम संस्करण : 2018

ISBN 978-93-86810-34-2

प्रकाशक
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, लेन नं 1, वेस्ट गोरख पार्क
शाहदरा, दिल्ली-110 032
फोन : 011-22825424, 09350809192
www.anuugyabooks.com
email: anuugyabooks@gmail.com

मूल्य : 250.00 रुपये

मुद्रक
अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

VISHWA CINEMA MAIN STREE *edited by* Vijay Sharma

पार्च्ड : पितृ सत्तात्मक व्यवस्था को पलटने का साहस

विपिन शर्मा

(1)

स्त्री विमर्श अथवा स्त्रीवाद आज ऐसे दौर में पहुँच गया है जहाँ आधी आबादी का एक हिस्सा आनन्द के अतिरेक में डूबा है, अर्थ और शरीर को भी आनन्द प्राप्ति का औजार बना लिया गया है, अथवा ऐसा दिखाया जा रहा है मानो आनन्द का चरम आपसे बित्ते भर दूर है। उदारीकरण के बाद एक नये किस्म की विश्व-व्यवस्था से हमारा परिचय होता है, जहाँ स्त्री कभी शराब के फेनिल झागों में तब्दील हो जाती है, कहीं क्रिस्टल ग्लास में एवं कहीं किसी उत्पाद को बेचने के लिए कामुकता की चासनी में लिपटी आदिम सी अपील करती हुई। वैसे यह उत्तर आधुनिकता के युग में बाजार केन्द्रित विमर्श ज्यादा है। मुख्यधारा का मीडिया खाती-पीती स्त्रियों को आधार बनाकर 'पॉवर वीमेन' की छवि गढ़ता है। लेकिन अदृश्य अन्धेरे हाशियों, गाँव देहात में जी रही महिलाओं की ओर उसका ध्यान नहीं जाता। विकास से वंचित तमाम सुख-सुविधा से महरूम पितृसत्ता के चाबुक तले जीती स्त्रियों की आवाज को उठाने वाला कौन है, भला हो वैचारिक रूप से प्रबुद्ध महिलाओं का जिन्होंने अपनी मुक्ति के संघर्ष को अपनी जिन्दगी जितना ही महत्त्वपूर्ण मानकर शिद्दत से अपनी लड़ाई को लड़ा।

यह संघर्ष आर्थिक-सामाजिक बराबरी का तो था ही, मानसिकता के परिवर्तन का भी था। 1920 के आसपास रचे गये तमिल गीत में ये भाव प्रबलता से अभिव्यक्त होते हैं–

नाचो और खुशियाँ मनाओ
जिन्होंने कहा था
महिलाओं का किताबें छूना पाप है
मर चुके हैं
जिन पागलों ने कहा था

ज्ञानमंगल
प्रकाशन | वितरण

हिंदी साहित्य : विमर्श के विविध आयाम
संपादक : प्रा. अनिता चिखलीकर
सहसंपादक : प्रा. डॉ. संतोष कोळेकर, प्रा. वर्षा पाटील
प्रकाशक |
ज्ञानमंगल प्रकाशन-वितरण
मु. पो. वाघोली, ता. माळशिरस, जि. सोलापूर-४१३११२
मोबा. : ९८९०१८०२५४
E-mail : dnyanmangalprakashanvitaran@gmail.com
© प्रा. अनिता चिखलीकर
मुखपृष्ठ | गंगाधर दिवेकर
प्रथमावृत्ती | ३० जुलै, २०२१
मुद्रक | यश प्रिंटर्स, कोल्हापूर
मोबाईल : ९८९०३०८३९६
मूल्य | ₹ ३००/-
ISBN : 978-93-92538-20-9

अनुक्रम...

१ निर्मला पुतुल की कविता .... डॉ. मनोहर भंडारे ७
२ समकालीन कविता और पर्यावरण .... प्रा. डॉ. प्रकाश आठवले ९
३ पर्यावरण और हम .... प्रा. सुनिता ग. हुन्नरगी १२
४ आदिवासी कविताओं में स्त्री विमर्श .... डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले १४
५ समकालीन हिन्दी कविता में पर्यावरण विमर्श .... विपुलकुमार सीमाभाई गामीत १७
६ समकालीन हिंदी कविता में स्त्री विमर्श .... चेतन विष्णु रवेलिया २०
७ 'चंद्रकांत देवताले के काव्य में आदिवासी चेतना' .... प्रा. हंबीरराव मारुती चौगले २२
८ जहीर कुरेशी की गज़लों में चित्रित नारी .... श्री. भिकाजी व्हनाप्पा कांबळे २५
९ आंबेडकरवादी कविता संग्रह: 'दिल पत्थर के बनाये हुए हैं' प्रा. परसराम रामजी राडे २८
१० दलित कविता का भाव-पक्ष .... प्रा. किरण सदानंद भोसले ३१
११ जगदीश गुप्त के कविता में विविध विमर्श .... डॉ. शैलजा गवळी ३४
१२ आधुनिक हिंदी कविता में विविध विमर्श .... डॉ. भास्कर भवर ३६
१३ गजलकार नीरज के काव्य में विविध विमर्श .... डॉ. संतोष कोळेकर ३९
१४ रघुवीर सहाय के काव्य में विविध विमर्श .... प्रा. हसिना मालदार ४१
१५ भूमण्डलीकरण और समकालीन कविता .... विपिन कुमार शर्मा ४३
१६ नारी विमर्श : ललमनियाँ की मौहरो .... डॉ. मंगला श्रीराम कठारे ४६
१७ दलित जनजीवन की अभिव्यक्ति : 'सलाम' .... प्रा. डॉ. प्रविण कांबळे ४८
१८ हिंदी कहानियों में अभिव्यक्त वृद्धों का विमर्श .... डॉ. एम. अब्दुल रज़ाक ५१
१९ समकालीन हिंदी कहानियों में चित्रित महिला शोषण .... डॉ. प्रभा शर्मा ५४
२० कहानियों में कामकाजी महिलाएँ और उनकी समस्याएँ .... डॉ. अल्पेशभाई एच. गामीत ५८
२१ 'मंडनमिसिर की खुरपी कहानी में व्यक्त वृद्ध विमर्श' .... प्रा. डॉ. पवन नागनाथ एमेकर ६१
२२ सामाजिक न्याय के संघर्ष की कहानी : 'मशालची' .... प्रा.डॉ. अजित चुनिलाल चव्हाण ६५
२३ 'जाँच अभी जारी है' ममता कालिया की कहानी में नारी संवेदना और शिल्प .... प्रा.डॉ. चंद्रकांत नरसप्पा एकलारे ६७
२४ उदय प्रकाश की कहानियों में उपभोक्तावादी संस्कृति का चित्रण .... प्रा. युवराज राजाराम मुळये ६९
२५ 'शब्द पखेरू' उपन्यास में सायबर क्राईम समस्या का चित्रण प्रा. अनिता संजय चिखलीकर ७१
२६ चित्रा मुद्गल की कहानियों में चित्रित नारी जीवन .... डॉ. शाहीन एजाज जमादार ७४
२७ ममता कालिया की कहानियों में नारी विमर्श .... डॉ. संतोष कुमार अहिरवार ७७
२८ अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानियों में नारी .... शेक मोहिद्दीन बाषा ८०
२९ डर का नहीं, डट का प्रतिरोध .... डॉ. विकास विलासराव पाटील ८२
३० तेजेन्द्र शर्मा की यथार्थ के साथ कहानियाँ .... मधु मेहता 'साथी' ८५
३१ ज्योत्स्ना मिलन की कहानियों में चित्रित नारी विमर्श .... कुमारी शकुंतला दशरथ कुंभार ८९

कुछ अलग है। उन्होंने देश को विनाश की कगार पर खड़ा किया है। पूरी तरह से भयानक परिस्थिति का निर्माण होने से जीवनमूल्यों में बदलाव आ गया है। आज सत्ताधारी लोगों ने मानवता को पैरों तले रौंद दिया है। अपने स्वार्थ के लिए मानवता में जातियता, सांप्रदायिकता के नाम पर बटवारा करके लड़वा रहे हैं। ऐसी विकृत व्यवस्था से मानवीय जीवन दूषित बनकर रह गया है। सब तरफ स्वार्थ लोलुपता ने रंग दिखा दिया है। इस पर रघुवीर सहाय कहते है-

"बीस वर्ष
खो गए भर में उपदेश में
एक पूरी पीढ़ी जन्मी पली पुसी क्लेश में
बेमानी हो गयी अपने ही देश में।"

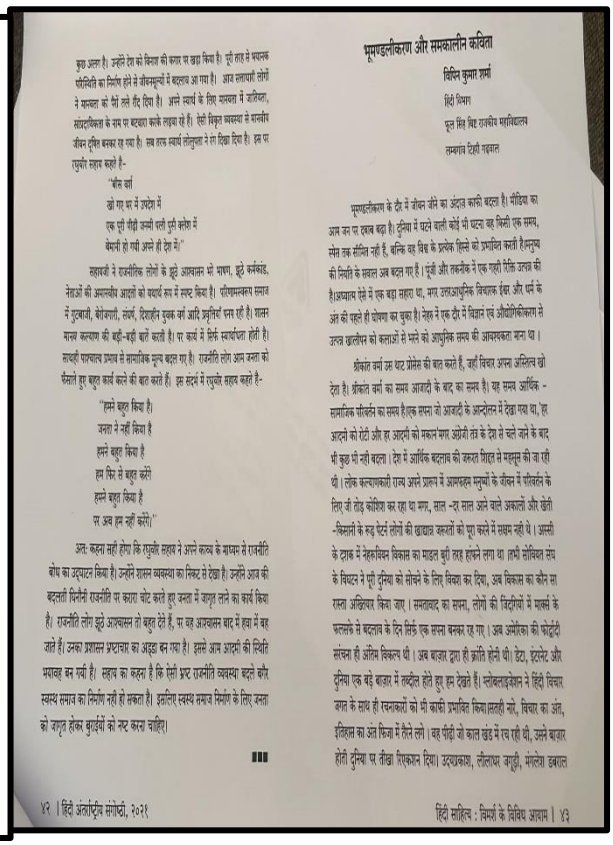

सहायजी ने राजनीतिक लोगों के झूठे आश्वासन भरे भाषण, झूठे कर्मकांड, नेताओं की अमानवीय आदतों को यथार्थ रूप में स्पष्ट किया है। परिणामस्वरूप समाज में गुटबाजी, बेरोजगारी, संघर्ष, दिशाहीन युवक वर्ग आदि प्रवृत्तियाँ पनप रही है। शासन मानव कल्याण की बड़ी-बड़ी बातें करती है। पर कार्य में सिर्फ स्वार्थांधता होती है। साथहीं पाश्चात्य प्रभाव से सामाजिक मूल्य बदल गए है। राजनीति लोग आम जनता को फँसाते हुए बहुत कार्य करने की बात करते हैं। इस संदर्भ में रघुवीर सहाय कहते है-

"हमने बहुत किया है।
जनता ने नहीं किया है
हमने बहुत किया है
हम फिर से बहुत करेंगे
हमने बहुत किया है
पर अब हम नहीं करेंगे।"

अतः कहना सही होगा कि रघुवीर सहाय ने अपने काव्य के माध्यम से राजनीति बोध का उद्घाटन किया है। उन्होंने शासन व्यवस्था का निकट से देखा है। उन्होंने आज की बदलती घिनौनी राजनीति पर करारा चोट करते हुए जनता में जागृत लाने का कार्य किया है। राजनीति लोग झूठे आश्वासन तो बहुत देते हैं, पर वह आश्वासन बाद में हवा में बह जाते हैं। उनका प्रशासन भ्रष्टाचार का अड्डा बन गया है। इससे आम आदमी की स्थिति भयावह बन गयी है। सहाय का कहना है कि ऐसी भ्रष्ट राजनीति व्यवस्था बदले बगैर स्वस्थ समाज का निर्माण नही हो सकता है। इसलिए स्वस्थ समाज निर्माण के लिए जनता को जागृत होकर बुराईयों को नष्ट करना चाहिए।

■■■

भूमण्डलीकरण और समकालीन कविता

विपिन कुमार शर्मा
हिंदी विभाग
फूल सिंह बिष्ट राजकीय महाविद्यालय
लम्बगांव टिहरी गढ़वाल

भूमण्डलीकरण के दौर में जीवन जीने का अंदाज़ काफी बदला है। मीडिया का आम जन पर दबाव बढ़ा है। दुनिया में घटने वाली कोई भी घटना वह किसी एक समय, स्पेस तक सीमित नही हैं, बल्कि वह विश्व के प्रत्येक हिस्से को प्रभावित करती है।मनुष्य की नियति के सवाल अब बदल गए है। पूंजी और तकनीक नें एक गहरी रिक्ति उत्पन्न की है।अध्यात्म ऐसे में एक बड़ा सहारा था, मगर उत्तरआधुनिक विचारक ईश्वर और धर्म के अंत की पहले ही घोषणा कर चुका है। नेहरु नें एक दौर में विज्ञानं एवं औद्योगिकीकरण से उत्पन्न खालीपन को कलाओं से भरने को आधुनिक समय की आवश्यकता माना था।

श्रीकांत वर्मा उस थाट प्रोसेस की बात करते हैं, जहाँ विचार अपना अस्तित्व खो देता है। श्रीकांत वर्मा का समय आजादी के बाद का समय है। यह समय आर्थिक - सामाजिक परिवर्तन का समय है।एक सपना जो आजादी के आन्दोलन में देखा गया था, 'हर आदमी को रोटी और हर आदमी को मकान'मगर अंग्रेजी तंत्र के देश से चले जाने के बाद भी कुछ भी नही बदला। देश में आर्थिक बदलाव की जरूरत शिद्दत से महसूस की जा रही थी। लोक कल्याणकारी राज्य अपने प्रारूप में आमफहम मनुष्यों के जीवन में परिवर्तन के लिए जी तोड़ कोशिश कर रहा था मगर, साल -दर साल आने वाले अकालों और खेती -किसानी के रूढ़ पेटर्न लोगों की खाद्यान्न जरूरतों को पूरा करने में सक्षम नही थे। अस्सी के दशक में नेहरूवियन विकास का माडल बुरी तरह हांफने लगा था तभी सोवियत संघ के विघटन ने पूरी दुनिया को सोचने के लिए विवश कर दिया, अब विकास का कौन सा रास्ता अख्तियार किया जाए। समतावाद का सपना, लोगों की जिंदगियों में मार्क्स के फलसफे से बदलाव के दिन सिर्फ़ एक सपना बनकर रह गए। अब अमेरिका की फोर्डवादी संरचना ही अंतिम विकल्प थी। अब बाज़ार द्वारा ही क्रांति होनी थी। डेटा, इंटरनेट और दुनिया एक बड़े बाज़ार में तब्दील होते हुए हम देखते हैं। ग्लोबलाइजेशन ने हिंदी विचार जगत के साथ ही रचनाकारों को भी काफी प्रभावित किया।सतही नारे, विचार का अंत, इतिहास का अंत फिजा में तैरने लगे। वह पीढ़ी जो काल खंड में रच रही थी, उसने बाज़ार होती दुनिया पर तीखा रिएक्शन दिया। उदयप्रकाश, लीलाधर जगूड़ी, मंगलेश डबराल

प्रकाशकः
पी.के पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
जे–231/A, गली नं. 14, चौथा पुस्ता,
करतार नगर, दिल्ली–110053
फोनः 9540483251, 79825512449
E-mail: pkpublication@gmail.com

दक्षिणी एशियाई प्रशांत क्षेत्र के स्त्रोंतेजिक वातावरण में भारतीय वैदेशिक सम्बन्ध

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

प्रथम संस्करण 2020

आई.एस.बी.एनः 978-81-944558-8-2

भारत में मुद्रितः
पी.के पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली–53 के लिए प्रकाशित एवं शहाब कम्प्यूटर, दिल्ली–द्वारा शब्द संयोजन तथा सचिन प्रिंटर्स, मौजपुर, दिल्ली में मुद्रित।

15

वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में भारत – अमेरिका रक्षा सम्बन्ध

–डॉ0 भरत सिंह चुफाल

शीत युद्ध के कारण वर्ष 1946 से लेकर 1989 तक सम्पूर्ण विश्व दो प्रमुख गुटों में बँटा रहा। इसी शीत युद्ध काल में सोवियत संघ भारत का स्वाभाविक सहयोगी था। चाहे संयुक्त राष्ट्र में समर्थन का प्रश्न हो या सामरिक सहयोग, हर क्षेत्र में सोवियत संघ ने भारत का समर्थन किया, लेकिन 1991 में सोवियत विघटन के बाद इस स्थिति में काफी परिवर्तन हुआ। सोवियत संघ का उत्तराधिकारी रूस अब आर्थिक एवं सामरिक दृष्टि से कमजोर हो चुका था।' दूसरी ओर अमेरिका के विश्व में एकमात्र शक्ति के रूप में उभरने के कारण भारत– अमेरिका सम्बन्धों में बदलाव आना स्वाभाविक था। शीत युद्ध के उपरान्त बनी परिस्थितियों ने दोनों देशों की सामरिक आवश्यकता में सहयोग के दायरे को बढ़ाया, साथ ही साथ आपसी शंका व विरोधाभास को दूर करने का प्रयास किया। इसी क्रम में दोनों देशों ने आपसी रक्षा सहयोग को आगे बढ़ाते हुए जनवरी 1992 में एक आर्मी एक्सक्यूटिव रिटरिंग ग्रुप की स्थापना की और मार्च 1992 में नौ सेना एवं अगस्त 1993 में वायुसेना को इसमें शामिल किया गया। जिससे दोनों देशों

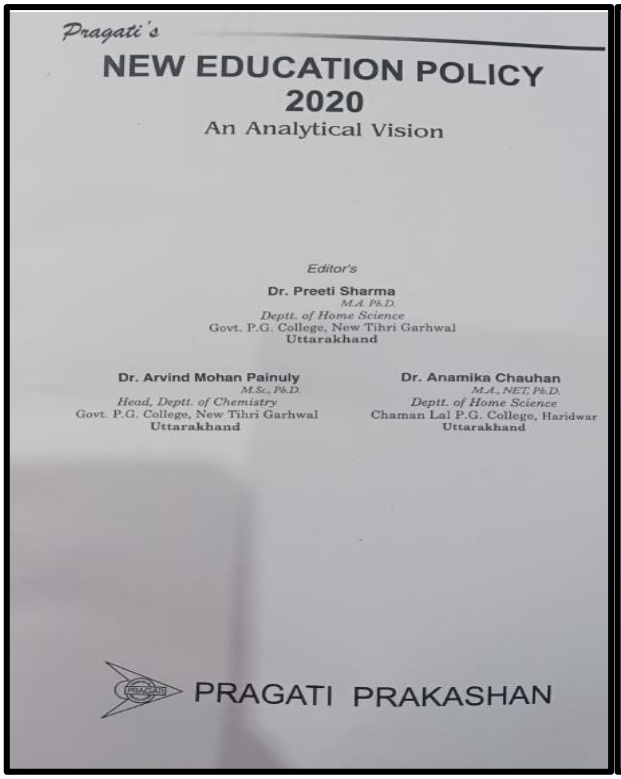

Pragati's

NEW EDUCATION POLICY 2020

An Analytical Vision

Editor's

Dr. Preeti Sharma
M.A. Ph.D.
Deptt. of Home Science
Govt. P.G. College, New Tihri Garhwal
Uttarakhand

Dr. Arvind Mohan Painuly
M.Sc., Ph.D.
Head, Deptt. of Chemistry
Govt. P.G. College, New Tihri Garhwal
Uttarakhand

Dr. Anamika Chauhan
M.A., NET, Ph.D.
Deptt. of Home Science
Chaman Lal P.G. College, Haridwar
Uttarakhand

PRAGATI PRAKASHAN

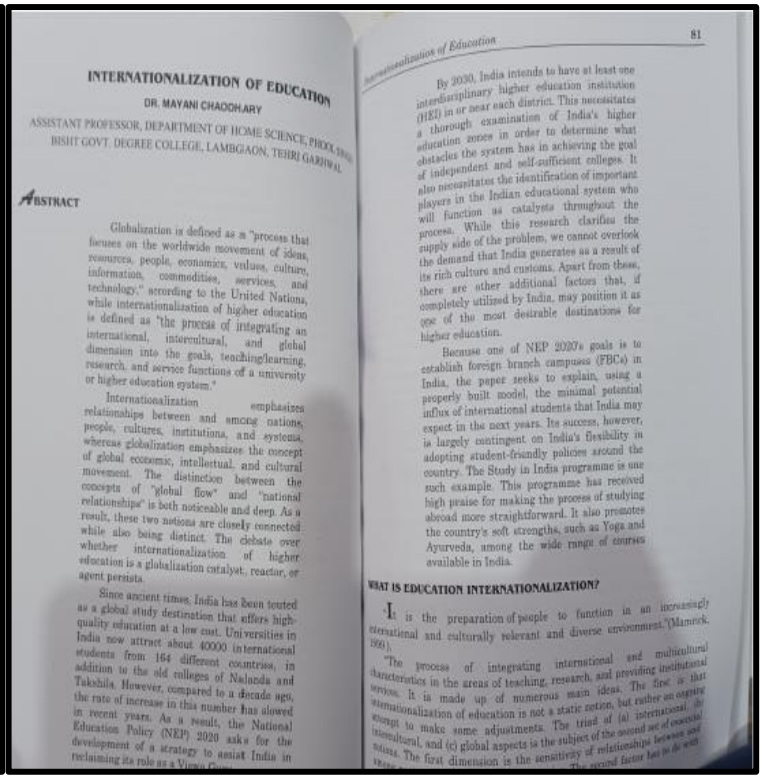

INTERNATIONALIZATION OF EDUCATION

DR. MAYANI CHAODHARY

ASSISTANT PROFESSOR, DEPARTMENT OF HOME SCIENCE, PHOOL SINGH BISHT GOVT. DEGREE COLLEGE, LAMBGAON, TEHRI GARHWAL

ABSTRACT

Globalization is defined as a "process that focuses on the worldwide movement of ideas, resources, people, economics, values, culture, information, commodities, services, and technology," according to the United Nations, while internationalization of higher education is defined as "the process of integrating an international, intercultural, and global dimension into the goals, teaching/learning, research, and service functions of a university or higher education system."

Internationalization emphasizes relationships between and among nations, people, cultures, institutions, and systems, whereas globalization emphasizes the concept of global economic, intellectual, and cultural movement. The distinction between the concepts of "global flow" and "national relationships" is both noticeable and deep. As a result, these two notions are closely connected while also being distinct. The debate over whether internationalization of higher education is a globalization catalyst, reactor, or agent persists.

Since ancient times, India has been touted as a global study destination that offers high-quality education at a low cost. Universities in India now attract about 40000 international students from 164 different countries, in addition to the old colleges of Nalanda and Takshila. However, compared to a decade ago, the rate of increase in this number has slowed in recent years. As a result, the National Education Policy (NEP) 2020 asks for the development of a strategy to assist India in reclaiming its role as a Vishwa Guru...

By 2030, India intends to have at least one interdisciplinary higher education institution (HEI) in or near each district. This necessitates a thorough examination of India's higher education zones in order to determine what obstacles the system has in achieving the goal of independent and self-sufficient colleges. It also necessitates the identification of important players in the Indian educational system who will function as catalysts throughout the process. While this research clarifies the supply side of the problem, we cannot overlook the demand that India generates as a result of its rich culture and customs. Apart from these, there are other additional factors that, if completely utilized by India, may position it as one of the most desirable destinations for higher education.

Because one of NEP 2020's goals is to establish foreign branch campuses (FBCs) in India, the paper seeks to explain, using a properly built model, the minimal potential influx of international students that India may expect in the next years. Its success, however, is largely contingent on India's flexibility in adopting student-friendly policies around the country. The Study in India programme is one such example. This programme has received high praise for making the process of studying abroad more straightforward. It also promotes the country's soft strengths, such as Yoga and Ayurveda, among the wide range of courses available in India.

WHAT IS EDUCATION INTERNATIONALIZATION?

"It is the preparation of people to function in an increasingly international and culturally relevant and diverse environment."(Mamrick, 1999).

"The process of integrating international and multicultural characteristics in the areas of teaching, research, and providing institutional services. It is made up of numerous main ideas. The first is that internationalization of education is not a static notion, but rather an ongoing attempt to make some adjustments. The triad of (a) international, (b) intercultural, and (c) global aspects is the subject of the second set of essential notions. The first dimension is the sensitivity of relationships between and ... The second factor has to do with ...

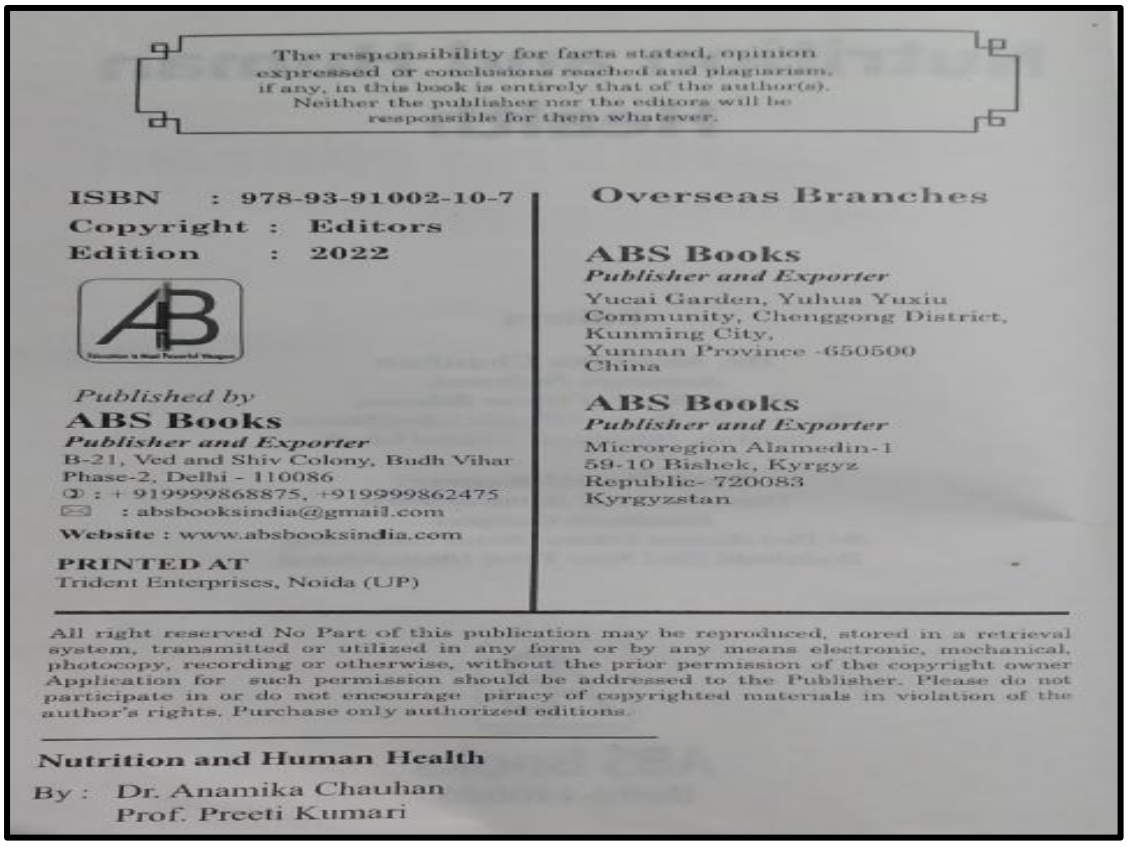

The responsibility for facts stated, opinion expressed or conclusions reached and plagiarism, if any, in this book is entirely that of the author(s). Neither the publisher nor the editors will be responsible for them whatever.

ISBN : 978-93-91002-10-7
Copyright : Editors
Edition : 2022

Published by
ABS Books
Publisher and Exporter
B-21, Ved and Shiv Colony, Budh Vihar
Phase-2, Delhi - 110086
✆ : +919999868875, +919999862475
✉ : absbooksindia@gmail.com
Website : www.absbooksindia.com

PRINTED AT
Trident Enterprises, Noida (UP)

Overseas Branches

ABS Books
Publisher and Exporter
Yucai Garden, Yuhua Yuxiu
Community, Chenggong District,
Kunming City,
Yunnan Province -650500
China

ABS Books
Publisher and Exporter
Microregion Alamedin-1
59-10 Bishek, Kyrgyz
Republic- 720083
Kyrgyzstan

All right reserved No Part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, transmitted or utilized in any form or by any means electronic, mechanical, photocopy, recording or otherwise, without the prior permission of the copyright owner Application for such permission should be addressed to the Publisher. Please do not participate in or do not encourage piracy of copyrighted materials in violation of the author's rights. Purchase only authorized editions.

Nutrition and Human Health

By : Dr. Anamika Chauhan
Prof. Preeti Kumari